इकाई 7 समाजशास्त्र का राजनीति विज्ञान के साथ संबंध*

संरचना

7.0 उद्देश्य

7.1 प्रस्तावना

7.2 राजनीति विज्ञान के साथ समाजशास्त्र का संबंध

7.2.1 राजनीति विज्ञान की परिभाषा

7.2.2 राजनीति विज्ञान की प्रकृति में बदलाव

7.2.3 समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान के बीच संबंध

7.3 समाजशास्त्र के उप-विषय के रूप में राजनीतिक समाजशास्त्र

7.3.1 राजनीति समाजशास्त्र और राजनीतिशास्त्र के समाजशास्त्र के बीच अंतर

7.3.2 राजनीतिक समाजशास्त्र में इस्तेमाल की जाने वाली अवधारणाएं

7.3.2.1 राजनीतिक संस्कृति

7.3.2.2 राजनीतिक समाजीकरण

7.3.2.3 राजनीतिक पूंजी

7.4 सारांश

7.5 संदर्भ

7.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप, निम्न बातों को समझने के लिए सक्षम हो पाएंगे :

- राजनीति विज्ञान की परिभाषा और समाजशास्त्र के साथ इसके संबंध;
- समाजशास्त्र के विकसित होते हुए उप-विषय के रूप में राजनीतिक समाजशास्त्र को समझना; तथा
- राजनीतिक समाजशास्त्र के क्षेत्र में इस्तेमाल की जाने वाली अवधारणाएं।

7.1 प्रस्तावना

इस इकाई में राजनीति विज्ञान के साथ समाजशास्त्र के संबंध की व्याख्या की गई है। समाजशास्त्र, जिसके अंतर्गत समाज और सामाजिक जीवन का अध्ययन किया जाता है उसमें मानव जीवन के विभिन्न राजनीतिक पहलुओं को भी रेखांकित किया जाता है। ये दोनों विषय एक-दूसरे से अलग अलग रूपों में रोजमर्रा की जिंदगी के विभिन्न मुद्दों और बातों एवं नीतिगत मामलों से जुड़े हुए सवालों का उपयोगी उत्तर प्रदान करने का प्रयास करते हैं अथवा उन मुद्दों के बारे में उपयोगी उत्तर प्रदान करने का प्रयास करते हैं जिनके बारे में हम यह सोचते हैं वे समाज और उसके कार्यों के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। उदाहरण के लिए शासन, नागरिक समाज, सामाजिक वर्ग एवं सामाजिक पूंजी, मतदान व्यवहार, विभिन्न समूहों के बीच सत्ता का संबंध, सहभागिता लोकतंत्र, स्वैच्छिक संगठन, सरकारी नीतियां और समाज पर उनका प्रभाव इत्यादि महत्वपूर्ण मुद्दे हैं। वास्तविकता यह है कि बहुत से महत्वपूर्ण मुद्दे होते हैं जो समाजशास्त्र और राजनीतिक विज्ञान दोनों की सीमाओं को पाटकर उन्हें नजदीक लाते हैं। इस प्रतिच्छेदन के फलस्वरूप, बहुत सारे उप-विषय

*डॉ. शाहिद, मानू, हैदराबाद

मानव जीवन के सामाजिक-राजनीतिक पहलुओं को एक अंतःविषयक संरचना के रूप मे अध्ययन करने के लिए उभर कर सामने आए हैं जैसे कि राजनीतिक समाजशास्त्र, राजनीतिक मानव विज्ञान एवं राजनीतिक अर्थव्यवस्था।

अनिवार्य रूप से समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान दोनों ही मानव के सामाजिक जीवन से जुड़े हुए हैं और व्यापक रूप से अपनी कॉमन रुचि साझा करते हैं। हालांकि, हम इस तथ्य को भी मान सकते हैं कि दोनों विषयों के दृष्टिकोण एक दूसरे से भिन्न-भिन्न होते हैं तथा सामाजिक जीवन और उसकी गतिशीलता के बारे में अलग-अलग विचार प्रस्तुत करते हैं। इसलिए समाजशास्त्र और राजनीतिक विज्ञान के बीच संबंधों को देखना महत्वपूर्ण है जिससे इस बात को स्पष्ट किया जा सके कि दोनों विषय सामाजिक समस्याओं को किस प्रकार निपटते हैं और दोनों विषयों कि अभिरुचि कहाँ पर के दूसरे से मिलती है तथा उनमें कहाँ अंतर है।

7.2 राजनीति विज्ञान के साथ समाजशास्त्र का संबंध

7.2.1 राजनीति विज्ञान की परिभाषा

समान्यतः राजनीति विज्ञान को राज्य, सरकार और राजनीति के वैज्ञानिक अध्ययन के रूप में परिभाषित किया जाता है। समान्यतः यहां सबसे अधिक इस्तेमाल की जाने वाली अवधारणाएं हैं - राजनीति, राज्य, सत्ता, राजनीतिक सामाजिककरण, नेतृत्व, शासन, निर्णय लेना, नीति बनाना और इसके प्रभाव। राजनीति राजनीतिक विज्ञान की मुख्य अवधारणा है। वास्तविकता यह है कि कई बार दोनों का उपयोग एक दूसरे के लिए किया जाता है। समान्यतः राजनीति को एक प्रक्रिया के तौर पर भी परिभाषित किया जाता है जिसके द्वारा लोग खुद को नियंत्रित करने वाले सामान्य नियमों को बनाते हैं, उनका संरक्षण करते हैं और उनमें संशोधन करते हैं। समान्यतः इस तरह की प्रक्रिया में सहयोग और संघर्ष दोनों ही सम्मिलित होते हैं। इस तरह शासन करने कला के रूप में राजनीति विभिन्न मामलों में सार्वजनिक संबंध, संघर्ष, कई प्रकार के निर्णय लेने, समझौता करने और सर्वसम्मति के मुद्दों से संबन्धित है, और इस तरह राजनीति सत्ता एवं संसाधनों के वितरण से संबंधित बातों का अनिवार्य रूप से वर्णन करती है। आइए राजनीति नामक शब्द से जुड़े कुछ अर्थों का अवलोकन करें।

सर्व प्रथम राजनीति को आम तौर पर सरकार के एक कला के रूप में माना जाता है। फिर भी यह तर्क देते हैं कि राजनीति विज्ञान है या नहीं, जैसा कि हम आम तौर पर समाजशास्त्र के वैज्ञानिक स्तर पर वाद-विवाद करते हैं यदि वास्तव में विभिन्न विद्वान नोट करते हैं कि राजनीति शब्द 'पोलिस' से लिया गया है जिस का अर्थ है '' शहर 'जिसका शाब्दिक अर्थ है' नगर राज्य '। प्राचीन काल में, यूनानी समाज को स्वतंत्र नगर राज्यों में विभाजित किया गया, जिनमें से प्रत्येक का अपना शासन शासन था। इस संदर्भ में, राजनीति या राजनीति विज्ञान को आम तौर पर 'पोलिस'- के मामलों में जाना जाता है यानी राज्य और उसके मामलों से संबंधित शैक्षिक विषय के रूप में राजनीतिक विज्ञान को राजनीति या राजनीतिक विज्ञान की इस परिभाषा को अपनाया गया है।

दूसरी बात यह है कि राजनीतिक और इसकी प्रकृति को परिभाषित करने वाला सबसे जरूरी पहलू वह है जिसे हम आम तौर पर सार्वजनिक संबंधों या जनता से जोड़ते हैं। वास्तव में, राजनीतिक विज्ञान का दायरा और परिभाषा राजनीतिक विज्ञान की संकुचित परिभाषा से परे है जिसे सिर्फ सरकार या राज्य के अध्ययन के रूप में माना जाता है। इसके अतिरिक्त , उपरोक्त वर्णित शब्द को 'निजी' शब्द से चुना जा सकता है। ये अंतर आम तौर

पर मानव जीवन के दो अलग-अलग विचारों पर आधारित होते हैं। वही वर्गीकरण आगे राज्य और नागरिक समाज के बीच दो वैचारिक श्रेणियों के बीच अंतर के अनुरूप है। उदाहरण स्वरूप राज्य के विभिन्न संस्थान जैसे कि नौकरशाही मशीनरी, मंत्रालय, अदालत और ट्रिब्यूनल, पुलिस, सेना, सामाजिक सुरक्षा व्यवस्था इत्यादि को इस अर्थ में सार्वजनिक माना जा सकता है कि ये बड़े पैमाने पर समाज के लिए जिम्मेदार होते हैं और वह भी राज्य में अपने संगठन, प्रबंधन, और सामाजिक जीवन के सुचारू कामकाज के लिए। इसके अतिरिक्त, उन्हें मुख्य रूप से करदाताओं के पैसे से सार्वजनिक खर्चों पर वित्त पोषित किया जाता है । इसके विपरीत, नागरिक समाज में विभिन्न सामाजिक संस्थान शामिल हैं जैसे कि परिवार, संबंध समूह, ट्रेड यूनियन, क्लब, सामुदायिक समूह, निजी व्यवसाय आदि। वे इस अर्थ में निजी हैं कि उन्हें कई बार नागरिक समाज की बजाय अपनी खुद की जरूरतों और रुचि को पूरा करने के लिए व्यक्तिगत नागरिकों द्वारा वित्त पोषित और स्थापित किया जाता है। इस तरह, उनका स्वरूप निजी या व्यक्तिगत केंद्रित होती है।

तीसरी बात यह है कि राजनीति को आम तौर पर समझौता करने, निर्णय लेने और सर्वसम्मति के महत्वपूर्ण मुद्दों से निपटने में उसकी विशिष्ट स्वरूप के संदर्भ में परिभाषित किया जाता है। मतभिन्नता को हल करने के उद्देश्य से राजनीति आम तौर पर सामाजिक ढ़ांचा से संबंधित होती है जिसमें सत्ता और निरा शक्ति के बजाय समझौता, सुलह और बातचीत के माध्यम से मतभेद को हल किया जाता है। मुख्य रूप से यह इस संदर्भ में है कि विभिन्न विद्वान आम तौर पर राजनीति और इसकी संबंधित प्रक्रियाओं को 'संभवतः कला' के रूप में परिभाषित करते हैं जो मुख्य रूप से राजनीति में संवाद, बहस और मध्यस्थता के माध्यम से संघर्ष को सुलझाने हेतु सैन्य समाधान के विपरीत वैकल्पिक साधनों के रूप में शांतिपूर्ण समाधान है। इस तरह राजनीति सत्ता और संसाधनों के प्रसार के रूप में परिभाषित किया जाने योग्य है क्योंकि समाज को अपने समुदाय के जीवन को सुचारू रूप से और शांतिपूर्वक चलाने की आवश्यकता होती है।

अंततः राजनीति आम तौर पर शक्ति और प्रभाव के प्रयोग से जुड़ी होती है। इस तरह राजनीति को विद्वान द्वारा सभी सामाजिक समूहों एवं संस्थानों में औपचारिक और अनौपचारिक, सार्वजनिक तथा निजी दोनों से जुड़े सभी सामूहिक सामाजिक गतिविधियों के केन्द्र के रूप में परिभाषित किया जाता है । इस संदर्भ में, समाज में सामाजिक संपर्क के प्रत्येक स्तर पर राजनीति होती है। क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर परिवारों, सहकर्मियों और संबंध समूहों, संगठनों और राष्ट्र-राज्यों में राजनीति पाई जा सकती है। व्यापक अर्थ में राजनीति अनिवार्य रूप से ताकत से जुड़ी हुई है जो दूसरों को प्रभावित करने की क्षमता है और जो कुछ भी संभव हो, राजनीति वांछित परिणाम प्राप्त करने की क्षमता भी है। प्रतिस्पर्धी मांगों और सीमित संसाधनों को ध्यान में रखते हुए मनुष्य आम तौर पर प्रतिस्पर्धा के दावे और प्रतिदावे करते हैं। अतः राजनीति को आम तौर पर सीमित संसाधनों पर मतभेद के रूप में देखा जाता है। साथ ही शक्ति को ऐसे साधनों के रूप में देखा जा सकता है जिसके द्वारा इस प्रकार के संसाधनों हेतु संघर्ष होते हैं। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि राजनीति विज्ञान मुख्य रूप से एक बौद्धिक विषय है जो कि राजनीति, सत्ता, शासन और राज्य कि संरचना और कार्य के बारे में ज्ञान की एक संस्था है। समाजशास्त्र की तरह, इसका विशिष्ट कार्य राजनीति के बारे में शिक्षार्थियों को व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करने के स्थान पर राजनीति के बारे में जानकारी प्रदान करना है। हालांकि समय के साथ साथ राजनीतिक विज्ञान के स्वरूप और दायरे में बदलाव आया है जिसका मुख्य कारण अन्य विषयों की अवधारणाओं, शर्तों और विधियों को अपनाना है और वह भी समाजशास्त्र से बहुत कुछ ग्रहण करने के कारण तथा इस तरह यह अंतःविषय दृष्टिकोण के साथ एक बौद्धिक विषय बन गया है । समाजशास्त्र और राजनीतिक विज्ञान के अंतर-संबंधों की जांच करने से पूर्व इस तरह के बदलाव को समझना और इसकी प्रशंसा करना महत्वपूर्ण है ।

7.2.2 राजनीति विज्ञान के केन्द्र बिन्दु में बदलाव

राजनीतिक विज्ञान के स्वरूप में एक शैक्षणिक विषय के रूप से समय के साथ कई परिवर्तन एवं बदलाव आये हैं। इसलिए अतीत में राजनीति से राजनीतिक व्यवस्था में बदलाव शासन करने के लिए सरकार एवं सामाजिक निर्धारकों के राजनीतिक कारण से हुए हैं। राजनीतिक विज्ञान में यह बदलाव समाज के अलग-थलग पड़ने से नहीं हुआ है। समसामयिक भूमंडलीकृत और अंतः संबन्धित संसार में बदलाव अनिवार्य रूप से बदलते दायरे और विषय की प्रकृति में प्रतिबिम्बित होते हैं। राजनीति विज्ञान ने अपना ध्यान न सिर्फ केंद्रित किया है अपितु अभिविन्यास और दृष्टिकोण में विशिष्ट सामाजिक विज्ञान बौद्धिक विषय के अधिक होने की दिशा में इसने अपनी अवधारणाओं और दृष्टिकोणों में संशोधन किया है। यद्यपि इसकी ऐतिहासिक जड़ें गहरी हो सकती हैं, शीत युद्ध की अवधि राजनीतिक वैज्ञानिकों को लोकतांत्रिक पूंजीवाद और सत्तावादी समाजवाद, राष्ट्रीय सदस्यता, वर्ग, स्थिति और अधिपत्य पर केंद्रित राजनीतिक पहचान जैसे मुद्दों पर विचार करने के लिए प्रेरित किया है जिसे बाद में विश्व भर में राजनीतिक विज्ञान विभाग में शिक्षण और अनुसंधान के मुद्दों के रूप में विकसित किया गया।

इसके अतिरिक्त, जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है कि वास्तव में शीत युद्ध के वर्षों में राजनीतिक दुनिया को देखने के दृष्टिकोण में तेजी से बदलाव आया। वास्तव में, राजनीति विज्ञान में बड़े बदलाव द्वितीय विश्व युद्ध के बाद आचरणवाद के आगमन के साथ हुये। तब से राजनीति विज्ञान ने राजनीतिक प्रक्रिया और व्यवहार का अध्ययन शुरू किया (स्मिथ 2004)। राजनीति विज्ञान का उद्देश्य अधिकांश राजनीतिक व्यवस्था में राजनीति, राजनीतिक नेतृत्व, निर्णय लेने और व्यक्तियों के व्यवहार पद्धति और समूहों की प्रकृति का परीक्षण करके राजनीतिक घटनाओं का अध्ययन और विश्लेषण करना बन गया। इसके अतिरिक्त, 1990 के दशक से द्वितीय विश्व युद्ध तक का समय पश्चिमी यूरोपीय शक्तियों का प्रभुत्व के लुप्त होने का था तथा अफ्रीका और एशिया के महाद्वीपों में नए देशों के उदय का था। साम्राज्य का यह ध्वंस अंततः सोवियत संघ और उस समय के अन्य कई कम्यूनिस्ट ताकतों के पाटन से मेल खाता है।

इसके उपरांत शीत युद्ध की अवधि में पुराने यूरोपीय बाजार, उत्तरी अमेरिकी मुक्त व्यापार समझौते, विश्व व्यापार संगठन, और यूरोपीय संघ, गैर-निरपेक्ष आंदोलन, अफ्रीकी संघ जैसे क्षेत्रीय राजनीतिक निकायों के विकास जैसे अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संस्थाओं का प्रसार हुआ। दक्षिणपूर्व एशियाई राष्ट्रों (एशियान देशों) का संघ जैसे कि पर्यावरण, श्रम और मानवाधिकार समूहों जैसे आंदोलन संगठनों के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय/बहुराष्ट्रीय निगमों के विकास भी हो सकते हैं। राजनीतिक समुदाय, राजनीतिक पहचान और इस तरह के अधिकार, पहचान, धर्म, और राजनीति विकास के रूप में विभिन्न समाज विज्ञान की दृष्टि से महत्वपूर्ण मुद्दों पर महत्वपूर्ण चिंताओं में से वाद-विवाद नए रूपों में उत्पन्न हुए। इसके अलावा, 1990 के दशक में और बाद में हम पहचान की राजनीति या पहचान की राजनीति के विकास में गति को महसूस कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, नस्लीय और जातीय मुद्दों लैंगिक न्याय, सांप्रदायिकता और धर्मनिरपेक्षता, आप्रवासी राजनीति, पारिस्थितिकी और विकास, स्वदेशी लोगों की राजनीति, राजनीति और लेस्बियन, समलैंगिक के मुद्दों, उभयलिंगी, विपरीतलिंगी (एलजीबीटी), एक प्रमुख प्रवचन के रूप में वैश्वीकरण के साथ चारों ओर राजनीति; महानगरीय नागरिकता, अंतरराष्ट्रीय सामाजिक आंदोलन हुआ जो राजनीति विज्ञान विषय से पहले अनुपस्थित थे वे सब जबरदस्ती उभकर सामने आए (स्मिथ 2004)। परिणामस्वरूप, इस विषय के कार्यक्षेत्र और प्रकृति में इस समयावधि में विस्तार किया गया अपितु इसमें अंतःविषय मुद्दों, वाद-विवाद को अधिक शामिल करके एक नया और आधुनिक रूप में एक

पारंपरिक आधार से बदल गया है और इस प्रकार इस विषय ने अपनी वैचारिक श्रेणियों को परिष्कृत किया। इस संदर्भ में जैसा की पहले उल्लेख किया गया है कि राजनीति विज्ञान ने मोड़ ले लिया है और इस तरह के नृजातियता, पहचान, धर्म, आदि के रूप में समाज विज्ञान की दृष्टि से और अधिक प्रासंगिक मुद्दों को शामिल किया। वैश्वीकरण, अंतर्राष्ट्रीयकरण, धर्मनिरपेक्षता, सांप्रदायिकता, पहचान की राजनीति और न्यू मीडिया के मुद्दों और विकास से संबन्धित कई अन्य समसामयिक मुद्दों पर बहस ने राजनीतिक विज्ञान को अधिक परिपक्व बना दिया है और उसे सामाजिक विज्ञान विषय के रूप में संशोधित किया है।

7.2.3 राजनीति विज्ञान के साथ समाजशास्त्र का संबंध

समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान बारीकी से कई मामलों में एक दूसरे से संबंधित हैं। यह कहा जाता है कि समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान के विषयों को सत्ता, अधिकार संरचनाओं, प्रशासन और शासन के अपने विश्लेषण में बारीकी से बुने हैं (लिपसेट 1964)। समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान के बीच कई समानताएं हैं। सबसे पहले, राजनीति विज्ञान अपने बुनियादी सिद्धांतों और तरीकों के लिए समाजशास्त्र पर अधिक निर्भर है। उदाहरण के लिए 20वीं शताब्दी के मध्य में मिशिगन सामाजिक मनोवैज्ञानिक और हरवर्ड में पार्सोनियन ने क्रमशः राजनीतिक व्यवहार और राजनीतिक विकास में राजनीतिक विज्ञान मुद्दों को नया स्वरूप प्रदान किया। दूसरी बात यह है कि दोनों केन्द्रित विशिष्टताओं को अर्थशास्त्र, इतिहास, मानव विज्ञान और मनोविज्ञान जैसे समान तृतीय पक्ष वाले विषयों से ग्रहण किया गया। तीसरी बात यह है कि मार्क्स, वेबर, ग्रामस्की, पैरेतो , पार्सन्स और मोस्का इत्यादि जैसे अनेक विद्वानों ने समान रूप से दोनों विषयों के विकास और उन्नयन में योगदान दिया है।

इसी प्रकार हारोल लेसवेल के ग्रंथ, 'पॉलिटिक्स : हू गेट्स वॉट, वेन एंड हाउ ' (1936) एक महत्वपूर्ण कार्य था जिससे समाजशास्त्री और राजनीतिक वैज्ञानिक दोनों ही प्रेरित होते हैं और एक अंतःविषय संरचना (लिपसेट 1964) में कार्य करने का नेतृत्व करते हैं। इस बात पर ध्यान दिया जा सकता है कि समसामयिक विश्व में बदलती सामाजिक जरूरतों और आकांक्षाओं को सामाजिक समस्याओं को समझने और आधुनिक समाज की समस्याओं के उत्तर खोजने हेतु अंतःविषय दृष्टिकोण जरूरी है।

समाजशास्त्र को अक्सर समाज के वैज्ञानिक अध्ययन के रूप में परिभाषित किया जाता है। हम यह भी नोट कर सकते हैं कि समाज कुछ भी नहीं है, बल्कि विभिन्न समूहों, संस्थानों, समुदायों, संघों, लोगों और उनकी रोजमर्रा की जीवन की गतिविधियों का एक जटिल नेटवर्क है। राजनीति और शक्ति गति की मानव जीवन की इन सभी अवधारणाओं के अभिन्न अंग हैं। विशेष रूप से, राजनीति या राजनीतिक रूप हमेशा किसी भी मानव समाज के आवश्यक घटक रहे हैं। आधुनिक समय में, किसी भी समाज की राजनीति, राजनीतिक संस्थाओं या राजनीतिक जीवन के किसी भी रूप के बिना कल्पना नहीं की जा सकती है। राज्य और शासन अपने कार्य, विकास और सामाजिक जीवन की आवश्यक आवश्यकताओं जैसे कानून और व्यवस्था, सुरक्षा और विकास दोनों के संदर्भ में किसी भी समाज के लिए बुनियादी हैं। सामाजिक विज्ञान भी सामाजिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करने के साथ सामाजिक दुनिया की स्थिति पर अनिवार्य रूप से प्रतिबिंबित करता है और मानव समाज की स्थिति पर, तेजी से वैश्विक रूप से जुड़े दुनिया में सामाजिक रिश्तों का नेटवर्क, राजनीतिक परंपराओं, जाति और राजनीति, जातीयता, सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की बढ़ती विविधता, आर्थिक स्थिति और भाषाई संबद्धता। समाजशास्त्र उनके सामाजिक निहितार्थों पर विशेष ध्यान देने के साथ राजनीतिक व्यवहार के विभिन्न पहलुओं की जांच करता है।

यह वास्तव में समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान के बीच गहरे संबंध को इंगित करता है। हालाँकि दोनों विधाएँ उनके दृष्टिकोण में भिन्न हैं। राजनीतिक वैज्ञानिक सरकारों और उनके नेताओं के उदय, पतन और परिवर्तनों की जांच करते हैं जबकि समाजशास्त्री सरकारों को सामाजिक संस्थाओं, राजनीतिक व्यवहार को सामाजिक गतिशीलता और नेतृत्व के रूप में देखते हैं क्योंकि सामाजिक घटनाएं सामाजिक विकास के लिए विविध निहितार्थ हैं।

समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान दोनों ही कई बिंदुओं पर चलते हैं और सामाजिक यथार्थ का व्यापक विश्लेषण करते हैं। इस प्रकार, दोनों के बीच समानता, विद्वानों द्वारा अच्छी तरह से सराहना की जाती है। हालाँकि, दोनों ही विषयों में बहुत अंतर है जिसका गंभीर रूप से आकलन करने की भी आवश्यकता है। समाजशास्त्री सबसे महत्वपूर्ण रूप से बातचीत प्रणाली की बात करते हैं, यह समूहों, संस्थानों या संगठनों के भीतर हो, जबकि राजनीतिक विज्ञान ऐसे समूहों या संगठनों के भीतर नियंत्रण तंत्र के बारे में बात करता है। इसलिए, समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान के संदर्भ या दृष्टिकोण का ढ़ांचा अलग-अलग हैं। पूर्व मुख्य रूप से अंतःक्रियात्मक विचारों के बारे में चिंतित है, जबकि बाद में शक्ति संरचना, आदेश और नियंत्रण तंत्र पर केंद्रित है। विद्वानों का तर्क था कि जब बातचीत प्रणाली के समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य को राजनीतिक घटनाओं के विश्लेषण के लिए लागू किया जाता है तो यह राजनीतिक समाजशास्त्र बन जाता है।

जैन और दोशी (1974) के अनुसार, जब राजनीति विज्ञान की शब्दावली को समाजशास्त्रीय विश्लेषण की शब्दावली में अनुवादित किया जाता है, तो इसे हम राजनीतिक समाजशास्त्र कहते हैं। यह इस अर्थ में है कि हम कह सकते हैं कि अलमंड कोलमैन के द पॉलिटिक्स ऑफ डेवलपिंग एरियाज़ (1960) और रजनी कोठारी के पॉलिटिक्स इन इंडिया (1970) पहले के राजनीतिक समाजशास्त्र के बढ़ते उदाहरण हैं। इसके परिणामस्वरूप, राजनीतिक समाजशास्त्र, जो मूल रूप से समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान के बीच अंतर का एक परिणाम है, समाजशास्त्र की अपेक्षाकृत एक नई शाखा है, जो समाज में विभिन्न राजनीतिक अंतर्ज्ञान, संघों, संगठनों, रुचि समूहों और शक्ति की गतिशीलता का अध्ययन करती है। राजनीतिक समाजशास्त्र, जिसे हम इस इकाई में बाद के खंड में विस्तृत करेंगे, अध्ययन के अपने क्षेत्रों के रूप में रुचि समूहों, राजनीतिक दलों, प्रशासनिक और नौकरशाही व्यवहार, सामाजिक विधानों, राज्य नीतियों, सुधारों और राजनीतिक विचारधाराओं का भी अध्ययन करते हैं।

बोध प्रश्न 1

1) पिछले कुछ दशकों में राजनीति विज्ञान में बदलाव की चर्चा।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान के बीच संबंधों पर चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

3) निम्नलिखित में से कौन सा मुद्दा समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान दोनों द्वारा सम्मिलित किया गया है :

क) धर्म

ख) जातीयता

ग) भाषा की बहस

क) उपरोक्त सभी

7.3 समाजशास्त्र के उप-क्षेत्र के रूप में राजनीतिक समाजशास्त्र

राजनीतिक समाजशास्त्र अक्सर समाजशास्त्र के विषय के भीतर एक नए, बढ़ते और बोझिल उप-क्षेत्र के रूप में देखता है। इसे समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान के बीच एक संपर्क सेतु माना जाता है। समाजशास्त्री दोनों के बीच दो तरह के रिश्ते देखते हैं (राठौर 1986)। दोनों में एक लेने देने का रिश्ता है। विभिन्न दूसरे विद्वान राजनीतिक समाजशास्त्र को समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान के बीच एक विवाह के रूप में देखते हैं जो अध्ययन करता है और गंभीर रूप से महत्वपूर्ण और नए क्षेत्रों का उल्लेख करता है जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है और जो समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान दोनों को छूता है, लेकिन दोनों में से एक द्वारा पर्याप्त रूप से अध्ययन नहीं किया जा सकता है।

इसके अलावा, राजनीतिक घटनाओं के विश्लेषण के समाजशास्त्रीय उपकरणों के आवेदन ने हमारे राजनीतिक व्यवहार की समझ को जोड़ा है (शर्मा 1978)। दोनों विधाओं के इस क्रॉस-बॉर्डरिंग ने न केवल राजनीतिक समाजशास्त्र को महत्वपूर्ण उप-क्षेत्र के रूप में विकसित किया है, बल्कि दोनों विषयों ने खुद को परिष्कृत किया है, अवधारणाओं के भंडार में जोड़ा है और सामाजिक विषयों को समझने और विश्लेषण करने के लिए अपने विषयों और मुद्दों और अनुप्रयोगों को चौड़ा किया है। मानव समाज के इस क्षेत्र/प्रदेश/सीमा में अनुसंधान के क्षेत्रों में सामाजिक एजेंसियों के एजेंट के रूप में सार्वजनिक एजेंसियों, समूहों और परिवार के कामकाज का विश्लेषण शामिल है। कुछ अन्य क्षेत्रों जैसे मतदान व्यवहार, राजनीतिक पारिस्थितिकी और राजनीतिक समुदाय राजनीतिक कामकाज के विषयों पर प्रतिबिंबित करते हैं। यह वास्तव में राजनीतिक प्रक्रियाएं हैं जिनके माध्यम से राजनीतिक सदस्यता, निष्ठा, वैचारिक प्रतियोगिता, समूहों और पहचान के मूल्य उन्मुखीकरण की अवधारणा बनती है और बदल जाती है, और एक बौद्धिक विषय के रूप में राजनीतिक समाजशास्त्र की बढ़ती परिपक्वता में जोड़ा जाता है। अंतर्राष्ट्रीय संबंधों और यूरोपीय अध्ययनों पर एंथोनी गिदेंस के सामाजिक सिद्धांत, जीवन के क्षेत्रों के वेबर का विश्लेषण

और राजनीति के बोरदिएऊ का विश्लेषण जैसे कि सामाजिक गतिविधि जैसे शिक्षा और अर्थशास्त्र आदि के किसी भी अन्य क्षेत्रों में कुछ उदाहरण हैं जो प्रक्षेपवक्र का संकेत देते हैं जैसे विषय की वृद्धि।

7.1 राजनीतिक समाजशास्त्र

राजनीतिक समाजशास्त्र में उप-क्षेत्र के रूप में व्यवहारवाद की कमी को दूर करने के प्रयास के रूप विकसित होता है, जो मानव व्यवहार के मनोवैज्ञानिक स्पष्टीकरण पर अत्यधिक महत्व को सही करके 1960 के दशक में राजनीतिक विज्ञान में उभरता है। राजनीतिक समाजशास्त्र अनिवार्य रूप से सामाजिक निर्धारकों, सामाजिक संदर्भ और राजनीति और समाज के बीच एक जैविक संबंध को राजनीति और इसके प्रक्रियाओं के सामाजिक पहलुओं को अनपैक करने के लिए देखता है। यह वास्तव में इस अर्थ में है कि राजनीति के समाज और सामाजिक अंगों की संरचनाएं राजनीतिक समाजशास्त्र के विषय में विश्लेषण की प्राथमिक इकाई बन गईं।

7.3.1 राजनीतिक समाजशास्त्र और राजनीति के समाजशास्त्र के बीच अंतर

राजनीतिक समाजशास्त्र की तरह, राजनीति का समाजशास्त्र समाजशास्त्र का एक उपक्षेत्र है। राजनीति का समाजशास्त्र राजनीतिक प्रक्रियाओं और संस्थागत तंत्र के समाजशास्त्रीय मूल्यांकन पर भी प्रकाश डालता है। इसके विपरीत, राजनीतिक समाजशास्त्र, राजनीतिक निर्णयों को समझने के लिए राजनीतिक घटनाओं और प्रक्रिया को समझाने और समझने पर ध्यान केंद्रित करता है। जैसा कि पहले भी चर्चा की जा चुकी है, राजनीतिक समाजशास्त्र वास्तव में राजनीति और समाज के बीच, सामाजिक संरचना और राजनीतिक संरचना के बीच तथा राजनीतिक व्यवहार और सामाजिक व्यवहार के बीच संबंधों को भी रेखांकित करता है। राजनीतिक समाजशास्त्र यह समझाते हुए कि लोग किस प्रकार से कार्य करते हैं। अनिवार्य रूप से एक घटना के सामाजिक कारणों और प्रासंगिक पहलुओं के साथ काम करता है, राजनीति के समाजशास्त्र के विपरीत राजनीतिक समाजशास्त्र एक क्रॉस-डिसिप्लिनरी महत्वपूर्ण खोज है जिसने विचाराधीन किसी भी मुद्दे को एक प्रासंगिक उपचार दिया।

इसके अलावा, यदि हम पार्टी प्रणाली का एक उदाहरण लेते हैं, तो राजनीतिक समाजशास्त्र न केवल एक राजनीतिक पार्टी के कार्यों की जांच करता है, बल्कि विचार के तहत महत्वपूर्ण मुद्दों को अनपैक इसके सामाजिक अनुकूलन स्थान को भी रेखांकित करता है। इसी तरह राजनीति का समाजशास्त्र, भारतीय राजनीति को जाति से ग्रस्त समाज के संदर्भ में देखता है, जबकि राजनीतिक समाजशास्त्र इस बात पर गौर करता है कि राजनीति ने भारतीय जाति व्यवस्था को किस तरह प्रभावित किया है, इसने देश में जाति या जाति व्यवस्था के राजनीतिकरण को प्रोत्साहित किया है। संक्षेप में, राजनीति का समाजशास्त्र मुद्दों का सतही उपचार प्रदान करता है जबकि राजनीतिक समाजशास्त्र एक परिधिगत विश्लेषण है जो अनिवार्य रूप से सामाजिक संदर्भ में इस मुद्दे की परीक्षा को अंतर्निहित करता है।

7.3.2 राजनीतिक समाजशास्त्र में प्रयुक्त अवधारणाएं

7.3.2.1 राजनीतिक संस्कृति

यह राजनीतिक समाजशास्त्र में सबसे अधिक उपयोग और अक्सर उल्लिखित अवधारणाओं में से एक है। यह कहा जाता है कि शब्दों की उत्पत्ति और विकास 1950 के दशक तक

7.2 राजनीतिक संस्कृति

पॉलिटिकल कल्चर शब्द का इस्तेमाल जोहान गॉटफ्रीड हेर्डर, एलेक्सिस डी टॉकविल और मॉन्टेसक्यू के अग्रणी कार्यों से शुरू होता है। हाल में और आधुनिक शब्दों का उपयोग, एलमंड के सेमिनल लेख के साथ राजनीति विज्ञान में शुरू होता है, जिसका शीर्षक था "तुलनात्मक राजनीतिक प्रणाली' जो 1956 में प्रकाशित हुई। एलमंड के शब्दों में राजनीतिक संस्कृति किसी भी राजनीतिक कार्रवाई के लिए अभिविन्यास की प्रणाली को संदर्भित करती है (फॉर्मिन्सन 2001) , पेज नंबर 6)।

तक जाती है जब शब्द लोकप्रिय रूप से उपयोग किए जाते थे और सामाजिक मुद्दों और प्रक्रियाओं को परिभाषित करने के लिए विषयात्मक वैचारिक उपकरणों का हिस्सा बन जाते थे विशेष रूप से, प्रत्येक राष्ट्र के कुछ राजनीतिक मानदंड, मूल्य और विश्वास होते हैं, जो निदेशित करते हैं कि लोग किस प्रकार सोचते हैं और उन्हें राजनीति के बारे में किस प्रकार कार्य करना चाहिए। ये सभी एक विशेष राष्ट्र की राजनीतिक संस्कृति का निर्माण करते हैं। प्रत्येक राष्ट्र की अपनी अलग राजनीतिक संस्कृति भी होती है। परिभाषा के संदर्भ में, राजनीतिक संस्कृति मानदंडों, विश्वास प्रणालियों और मूल्यों के एक समूह को संदर्भित करती है, जो अनिवार्य रूप से राजनीतिक प्रणाली के प्रति उन्मुख हैं। ऐसे सांस्कृतिक तत्व समाज द्वारा साझा किए जाते हैं और संबंधित समाज या राष्ट्र के संबंधित राजनीतिक व्यवस्था के लिए अपेक्षाकृत विशिष्ट होते हैं। राजनीतिक संस्कृति को एक विशेष राजनीतिक मनोविज्ञान (विश्वास/अनुभूति), राजनीतिक विचार (विचारधारा), और राजनीतिक संस्थानों (एक निश्चित शासन प्रणाली के लिए प्राथमिकता) के एक व्यक्तिपरक अभिविन्यास के रूप में भी परिभाषित किया गया है। इस अर्थ में, राजनीतिक संस्कृति यह सोचने का एक विशिष्ट और प्रतिरूपित तरीका है कि लोगों के राजनीतिक और आर्थिक जीवन को कैसे संचालित किया जाना चाहिए। यह इस बात पर भी निर्भर करता है कि समाज कैसा है, अपने लोगों के साथ कैसा व्यवहार करता है और इससे भी महत्वपूर्ण राजनीतिक संस्कृति यह है कि लोग कैसे सोचते हैं, उनकी क्या मान्यताएं और मूल्य हैं जो राजनीतिक परंपराओं को निर्धारित करते हैं और उनके राजनीतिक लक्ष्यों को निर्देशित करते हैं। उदाहरण के लिए, स्वतंत्रता, समानता, धर्मनिरपेक्षता और लोकतंत्र भारत की राजनीतिक संस्कृति के तत्व हैं। यहां, हमें विचारधारा और संस्कृति के बीच अंतर करना चाहिए। यहां संस्कृति सरकार के बारे में आम धारणाओं, मूल्यों और परंपराओं को संदर्भित करती है जबकि विचारधारा विचारों या नीतियों का एक समूह है जिसे सरकार को आगे बढ़ाने के लिए चाहिए। उदारवाद, नव-उदारवाद, पूंजीवाद या साम्यवाद विचारधाराओं के समूह हैं जो कुछ राज्यों को वांछनीय के रूप में देखते हैं और तदनुसार अपनी राजनीतिक व्यवस्था को व्यवस्थित करते हैं। उदाहरण के लिए, आजादी के बाद भारत ने लोकतंत्र को अपनी वांछित प्रणाली के रूप में राज्य व्यवस्था और मिश्रित अर्थव्यवस्था के रूप में अपनाया और देश में धीरे-धीरे इसे राजनीतिक संस्कृति के रूप में अपनाया गया। हालांकि, यह 1990 के दशक के बाद था कि राज्य की विचारधारा के रूप में नव-उदारवाद भारत में पहले की राजनीतिक अभिविन्यासों पर तरजीह व वरीयता लेता है। इस अर्थ में, राजनीतिक संस्कृति गतिशील है क्योंकि यह राज्य की समय और सुविधा और उसके नीतिगत उद्देश्यों की आवश्यकता के अनुसार बदलती रहती है।

7.3.2.2 राजनीतिक समाजीकरण

राजनीतिक समाजीकरण शब्द का इस्तेमाल अक्सर राजनीतिक समाजशास्त्र में किया जाता है। सामाजिक रूप से, समाजीकरण एक आजीवन सीखने की प्रक्रिया है। राजनीतिक समाजीकरण शब्द राजनीतिक भूमिका या व्यवहार के सीखने से संबंधित है। लोगों को शिक्षित किया जाता है और इस प्रकार बड़ी राजनीतिक संस्कृति का अछम हिस्सा बनाया

जाता है जो पीढ़ी दर पीढ़ी जारी रहता है। राजनीतिक समाजीकरण इस प्रकार मूल रूप से एक सामाजिक प्रक्रिया है कि कैसे लोग अपने राजनीतिक दृष्टिकोण को बनाते हैं, अपनी राजनीतिक भूमिका सीखते हैं और इस प्रकार अपनी राजनीतिक संस्कृति बनाते हैं। सरल शब्दों में, राजनीतिक समाजीकरण एक सामाजिक प्रक्रिया को संदर्भित करता है जिसके तहत लोग या समूह कुछ अपेक्षित राजनीतिक भूमिका को पूरा करने के लिए राजनीतिक व्यवहार सीखते हैं। अधिकांश बच्चे अपने राजनीतिक मूल्यों और परंपराओं को कम उम्र में ही सीख लेते हैं। हालांकि, समय-समय पर दृष्टिकोण और मानदंड विकसित होते रहते हैं और बदलते रहते हैं, क्योंकि लोग विभिन्न एजेंसियों के माध्यम से व्यापक समाज के संपर्क में आते हैं जो सामाजिक एजेंटों के रूप में कार्य करते हैं। उदाहरण के लिए, परिवार, पड़ोस, स्कूल और सहकर्मी समूह बच्चों को कम उम्र के नजरिए से प्रभावित करते हैं और कम उम्र में अपने विचारों को आकार देते हैं, जबकि बड़े पैमाने पर मीडिया, राजनीतिक दल, राज्य, नागरिक समाज, रुचि समूह जैसी एजेंसियां बाद के युग में लोगों के रवैये को आकार देती हैं। ऐसी एजेंसियां लोगों के रवैये को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उदाहरण के लिए, समकालीन वैश्वीकृत और अतः संबंधित विश्व मास मीडिया में लोगों की सोच और विचारों को आकार देने के लिए काफी प्रभाव है। सूचना प्रौद्योगिकी संचालित मीडिया को एक अत्यधिक सशक्त इकाई माना जाता है जो बहुत कम समय में बहुत सी जानकारी फैलाता है और साझा करता है और लोगों की राय और राजनीतिक दृष्टिकोण को बहुत प्रभावित करता है।

राजनीतिक समाजीकरण प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष और एकीकरण या विभाजनकारी हो सकता है। उदाहरण के लिए, समाजीकरण व्यक्तिगत अनुभव के माध्यम से या ऊपर बताए गए किसी एजेंट या एजेंसी के माध्यम से हो सकता है। इसी तरह, समाजीकरण कुछ समूहों के खिलाफ एकीकरण या 'दूसरों' की भावना पैदा करता है। इस प्रकार यह विभाजनकारी भी हो सकता है। समाजीकरण की प्रक्रियाएं वैचारिक रूप से निर्देशित हो भी सकती हैं और नहीं भी। उदाहरण के लिए, कुछ राजनीतिक दल अपने कैडरों को प्रशिक्षित करते हैं या आबादी को अपने एजेंडे की तर्ज पर लक्षित करते हैं, जबकि नागरिक/मानवाधिकार समूह, किसी विशेष राजनीतिक विचारधारा या पार्टी की राजनीति के साथ नहीं, बस लोगों को उनके अधिकारों के बारे में जागरूक करने का प्रयास करते हैं।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि राजनीतिक समाजीकरण राजनीतिक भूमिका को आकार देने में मदद करता है। राजनीतिक दल, हित समूह और ऐसे अन्य संगठन अपने कैडर या सदस्यों को अपने एजेंडा की लाइन पर प्रशिक्षित करते हैं। एक अवधारणा के रूप में, राजनीतिक भूमिका राजनीतिक व्यवहार से संबंधित है। सामाजिक रूप से बोलना, एक भूमिका एक सामाजिक रूप से अपेक्षित व्यवहार है। राजनीतिक भूमिका शब्द एक प्रक्रिया को संदर्भित करता है जब किसी व्यक्ति को राजनीतिक क्षेत्र के भीतर प्रदर्शन करने के लिए स्थिति और जिम्मेदारियों के सेट के साथ जोड़ा जाता है। समाज को यह उम्मीद है कि सदस्य किसी दिए गए राजनीतिक व्यवस्था के भीतर ही प्रदर्शन करेंगे। दी गई भूमिका का यह प्रदर्शन राजनीतिक समाजीकरण की प्रक्रियाओं के साथ-साथ चलता है, जिसके द्वारा एक व्यक्ति गुजरता है। यह आगे राजनीतिक संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाने में मदद करता है।

7.3.2.3 राजनीतिक पूंजी

राजनीतिक पूंजी, संसाधन का प्रकार है जो एजेंटों को राजनीति के क्षेत्र में दूसरों के निर्णय और कार्रवाई को प्रभावित करने के लिए संदित करता है, संघर्ष और अभ्यास करता है (कौप्पी 2003)। राजनीतिक पूंजी वास्तव में राजनीति के क्षेत्र में एक प्रतीकात्मक पूंजी है।

सामान्य प्रतिमान में, राजनीतिक पूंजी एक प्रकार की सद्भावना, विश्वास और प्रतिष्ठा है जो व्यक्ति या राजनेता जनता के साथ राजनीतिक लाभ प्राप्त करने के लिए कमाते हैं। इस तरह की सद्भावना और राजनेता या व्यक्ति जिस पर विश्वास करते हैं वह वास्तव में सार्वजनिक पक्ष हासिल करने के लिए उनके साथ संपत्ति है।

राजनीतिक पूंजी को समझने और उसका आकलन करने के लिए, किसी भी इकाई जैसे कि राजनीतिक दल, एक क्षेत्रीय राजनीतिक गठन जैसे कि एक रुचि समूह, एक जाति संघ, राष्ट्र-राज्य के एक संघ का विश्लेषण किया जा सकता है ताकि सामाजिक संबंध में निहित सत्ता की गतिशीलता, प्रभुत्व, आधिपत्य और नियंत्रण तंत्र को समझा जा सके। अमीर राजनीतिक पूंजी वाले लोग अक्सर अधिक शक्ति और प्रभुत्व को नियंत्रित कर सकते हैं। वे अधिक समय तक उसी पर पकड़ बना सकते हैं। विशेष रूप से, राजनीतिक पूंजी चुनाव जीतने के दौरान उत्पाद और प्रक्रिया दोनों के रूप में कार्य कर सकती है, एक निर्वाचित कार्यालय को बनाए रखने और लोगों को प्रभावित कर सकती है या जुटा सकती है।

बोध प्रश्न

1) समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान के एक चौराहे के रूप में राजनीतिक समाजशास्त्र के उद्भव पर चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) राजनीतिक समाजीकरण क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3) राजनीतिक समाजीकरण की एजेंसियां क्या हैं?

क) मास मीडिया

ख) राजनीतिक दल

ग) रुचि समूह

घ) उपरोक्त सभी

7.4 सारांश

इस इकाई में, हमने राजनीति विज्ञान के अर्थ और समाजशास्त्र के साथ इसके संबंध के बारे में बताया है। हमने वर्णन किया है कि कैसे दोनों विषयों को आपस में जोड़ा गया है और कैसे दोनों विषयों ने समय की अवधि में अपनी शर्तों और अवधारणाओं को उधार, परिष्कृत और समृद्ध किया है। हम समझ गए कि समाज और उसके मुद्दों को समझने के लिए समाजशास्त्र किस तरह अंतःविषय ढांचे को विकसित करने में राजनीति विज्ञान के साथ मिला है।

जैसा कि हमने राजनीतिक समाजशास्त्र नामक उप-क्षेत्र पर भी चर्चा की है जो मुख्य रूप से चौराहे की एक शाखा है, और समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान के बीच वैचारिक आदान प्रदान है। पहचान, सांप्रदायिकता, नागरिक समाज, मतदान व्यवहार आदि जैसे मुद्दे कुछ महत्वपूर्ण चिंताएँ हैं जो राजनीति विज्ञान और समाजशास्त्र दोनों के करीब हैं। ये मुद्दे राजनीतिक समाजशास्त्र में शामिल हैं, समाजशास्त्र के उप-क्षेत्र के रूप में, समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान के बीच मौजूदा चौराहे पर प्रतिबिंबित करते हैं।

7.5 संदर्भ

फॉर्मिसानो, रोनाल्ड पी (2001)। राजनीतिक संस्कृति की अवधारणा, द जर्नल ऑफ इंटेर्डिस्सीप्लिनरी , खंड - 31, नंबर 3, पृ. - 393-426।

गिडेंस, एंथोनी (1995)। पॉलिटिक्स , सोशियोलॉजी एंड सोश्ल थ्योरी : एन्काउंटर्स विथ क्लासिकल एंड कॉन्टेम्पररी सोशल थॉट, स्टैनफोर्ड, स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस

जैन, सी.एम. और दोशी, एस.एल. (1974)। बेयरिंग ऑफ सोशियोलॉजी। खंड 35, नंबर 1, पृ. 50-59।

कौप्पी, निलो (2003)। बॉर्डियू की राजनीतिक समाजशास्त्र और यूरोपीय एकता, थ्योरी एंड सोसाइटी , खंड 32, नंबर 5/6, प्रतीकात्मक शक्ति के समाजशास्त्र पर विशेष अंकः पियरे बॉर्डियू की स्मृति में एक विशेष अंक, पृ. 775-789।

लिपसेट, एस एम (1964)। समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञानः एक ग्रंथ सूची, अमेरिकन सोशिओलोजिकल रिव्यू , खंड- 29, नंबर 5, पृ. 730-734

राठौर, एल.एस. (1986)। राजनीतिक समाजशास्त्रः अर्थ, विकास और दायरा , द इंडियन जर्नल ऑफ़ पॉलिटिकल साइंस, खंड 47, नंबर -, पृ. 119-140

शर्मा, एल.एन. (1978)। राजनीतिक समाजशास्त्रः तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन का परिप्रेक्ष्य, द इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस, खंड 39, नंबर 3, पृ. 390-405।

स्मिथ रोजर्स एम (2004)। पहचान, रुचि, और राजनीति विज्ञान का भविष्य, पर्सपेक्टिब्स ऑन पॉलिटिक्स , खंड 2, 2 (जून, 2004), पृ. 301-312